स.	चेकिंग विन्दु (पॉइन्टस्)
1.	अमृतवेले मन्सा द्वारा शान्ति, प्रेम और खुशी की किरणें फैलायी? हॉं/ ना/ %
2.	सारा दिन स्वराज्य अधिकारी स्थिति कितनी रही? %
3.	सारा दिन संकल्प और समय को कितना सफल किया? %
4.	सारा दिन अशरीरीपन की ड्रिल कितनी बार की?
5.	आज कितना समय बैठकर योग किया?

26-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - अपना सच्चा-सच्चा चार्ट रखो तो अवस्था अच्छी रहेगी, चार्ट रखने से कल्याण होता रहेगा"

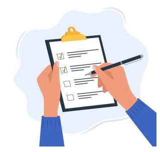

प्रश्नः-कौन सी स्मृति पुरानी दुनिया से सहज ही किनारा करा देती है?

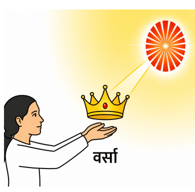

उत्तर:-अगर यह स्मृति रहे कि "हम कल्प-कल्प बाप से बेहद का वर्सा लेते हैं। अभी फिर से हमने शिवबाबा की गोद ली है - वर्सा लेने के लिए। बाबा ने हमें एडाप्ट किया है, हम सच्चे-सच्चे ब्राह्मण बने हैं। शिवबाबा हमें गीता सुना रहे हैं।" यही स्मृति पुरानी दुनिया से किनारा करा देगी।

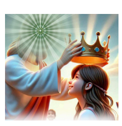

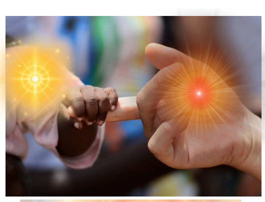

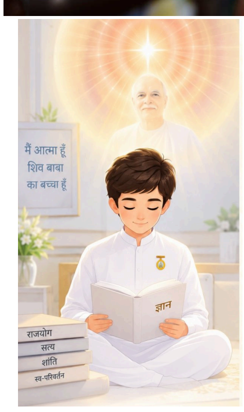

26-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। तुम बच्चे यहाँ बैठे हो शिवबाबा की याद में, तो तुम जानते हो वह हमको सुखधाम का मालिक फिर से बना रहे हैं। बच्चों की बुद्धि में अन्दर कितनी खुशी होनी चाहिए, यहाँ बैठे बच्चों को खजाना मिलता है ना। अनेक प्रकार के कॉलेजों में, युनिवर्सिटीज़ में किसी की भी बुद्धि में यह बातें नहीं रहती। तुम ही जानते हो कि बाबा हमको स्वर्ग का मालिक बना रहे हैं। यह खुशी रहनी चाहिए ना। इस समय और सभी ख्यालात निकालकर एक बाप को ही याद करना है। यहाँ जब बैठते हो तो बुद्धि में नशा रहना चाहिए कि हम अभी सुखधाम का मालिक बन रहे हैं। सुख और शान्ति का वर्सा हम कल्प-कल्प लेते हैं। मनुष्य तो कुछ नहीं जानते। कल्प पहले भी बहुत मनुष्य अज्ञान के अन्धेरे में कुम्भकरण की नींद में सोये खत्म हो गये थे। फिर भी ऐसे ही होगा। बच्चे समझते हैं (वाह रे मैं...) हमको बाप ने एडाप्ट किया है वा हमने शिवबाबा की धर्म गोद ली है। जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। अभी हम ब्राह्मण हैं। (चढ़ाओ नशा...) हम सच्चा-सच्चा गीता का पाठ सुन रहे हैं। हम बाबा से फिर से राजयोग और ज्ञान बल से वर्सा लेते हैं। ऐसे-ऐसे ख्यालात अन्दर में आने चाहिए ना। बाप

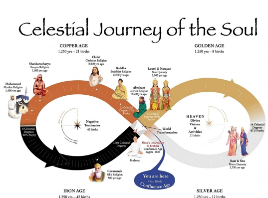

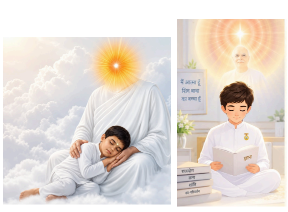

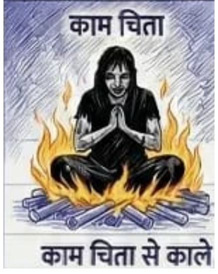

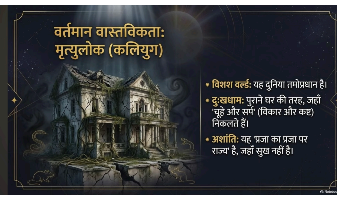

भी आकर खुशी की बातें बतलाते हैं ना। बाप जानते हैं बच्चे काम-चिता पर बैठ काले भस्मीभूत हो गये हैं इसलिए अमरलोक से मृत्युलोक में आता हूँ। तुम फिर कहते हो हम मृत्युलोक से अमरलोक जाते हैं। बाप कहते हैं - हम मृत्युलोक में जाता हूँ, जहाँ सबकी मृत्यु हो गई है, उनको फिर से अमरलोक में ले जाता हूँ। शास्त्रों में तो क्या-क्या लिख दिया है। वह सर्वशक्तिमान् है, जो चाहे सो कर सकते हैं। परन्तु बच्चे जानते हैं, उनको बुलाया ही जाता है हे पतित-पावन बाबा आओ, हमको आकर पतित से पावन बनाओ। दु:ख हरकर सुख दो, इसमें जादू की कोई बात नहीं है। बाप आते ही हैं कांटों से फूल बनाने।

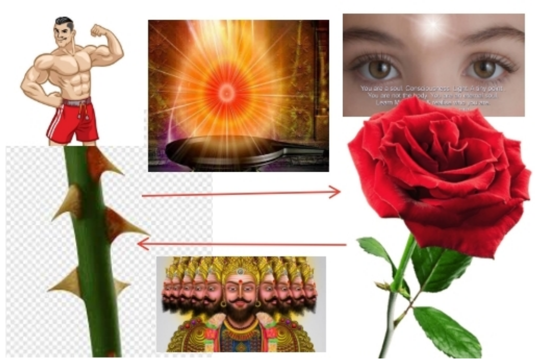

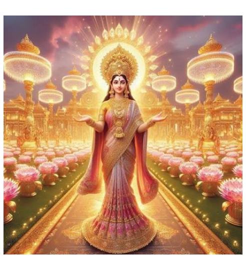

तुम जानते हो हम ही सुखधाम के देवता थे, सतोप्रधान थे। हर एक को सतोप्रधान से तमोप्रधान में आना ही है। बच्चों को यहाँ बैठने समय तो और ही मज़ा आना चाहिए। याद आना चाहिए। बाप को ही सारी दुनिया याद करती है। हे लिबरेटर, गाइड, हे

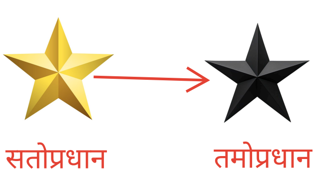

सोचो तुमको कौन मिला है,
कौन तुम्हारा साथी है।

mp.

26-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

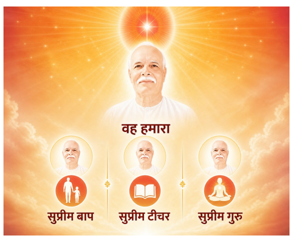

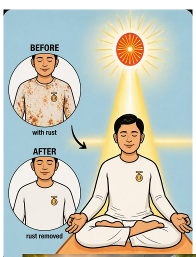

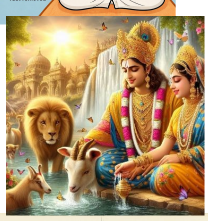

पतित-पावन आओ। बुलाते तब हैं जबकि रावणराज्य में हैं। सतयुग में थोड़ेही बुलाते, यह बातें बड़ी सहज समझने की हैं। यह किसने सुनाई हैं? बाप की भी महिमा करेंगे, टीचर, सतगुरू की भी महिमा करेंगे - तीनों एक ही हैं। यह तुम्हारी बुद्धि में है। यह बाप, टीचर, सतगुरू भी है। शिवबाबा का धन्धा ही है पतितों को पावन बनाना। पतित जरूर दु:खी होंगे। सतोप्रधान सुखी, तमोप्रधान दु:खी होते हैं। इन देवताओं का कितना सतोगुणी स्वभाव है। यहाँ मनुष्यों का कलियुगी तमोगुणी स्वभाव है। बाकी हाँ, मनुष्य नम्बरवार अच्छे व बुरे होते हैं। सतयुग में ऐसे कभी नहीं कहेंगे कि यह खराब है। यह ऐसा है। वहाँ बुरे लक्षण कोई होते नहीं। वह है ही दैवी सम्प्रदाय। हाँ, साहूकार और गरीब हो सकते हैं। बाकी अच्छे वा बुरे गुणों की भेंट वहाँ होती नहीं, सभी सुखी रहते हैं। दु:ख की बात नहीं, नाम ही है सुखधाम। तो बच्चों को बाप से पूरा वर्सा लेने का पुरुषार्थ करना चाहिए। अपना चित्र और लक्ष्मी-नारायण का चित्र भी रख सकते हो। कहेंगे कोई तो इन्हों को सिखलाने वाला होगा। यह तो भगवानुवाच है ना। भगवान को अपना शरीर नहीं है। वह आकर

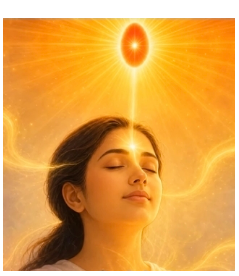

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

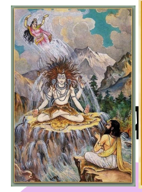

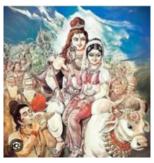
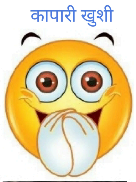

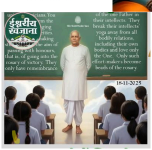

लोन लेते हैं। गाया भी हुआ है भागीरथ, तो जरूर रथ पर विराजमान है। बैल पर थोड़ेही आयेगा। शिव और शंकर इकट्ठा कर दिया है, तब बैल दे दिया है। तो बाप कहते हैं - तुमको कितना खुश होना चाहिए, हम बाप के बने हैं। बाप भी कहते हैं - तुम हमारे हो।

Niswarth Sevadhari मेरा बाबा

बाप को पद पाने की खुशी नहीं है। टीचर तो टीचर है, उनको पढ़ाना है। बाप कहते हैं - बच्चे, मैं सुख का सागर हूँ। अभी तुमको अतीन्द्रिय सुख भासता है, जब हमने तुमको एडाप्ट किया है। एडाप्शन तो किसम-किसम की होती है। पुरुष भी कन्या को एडाप्ट करते हैं। वह समझती हैं यह हमारा पति है, अभी तुम समझते हो - शिवबाबा ने हमें एडाप्ट किया है। दुनिया में इन बातों को नहीं समझते। उन्हों की वह एडाप्शन है - एक दो पर काम-कटारी चलाने की।

Example

समझो कोई राजा बच्चे को गोद में लेता है, एडाप्ट करता है सुख के लिए, परन्तु वह है अल्पकाल का सुख। संन्यासी भी एडाप्ट करते हैं ना। वह कहेंगे यह हमारा गुरू है, वह कहेगा यह हमारा फॉलोअर्स है। कितनी एडाप्शन है। बाप बच्चे को एडाप्ट करते हैं। उनको सुख तो देते हैं फिर शादी कराने से जैसे दु:ख का वर्सा दे देते हैं। गुरू की

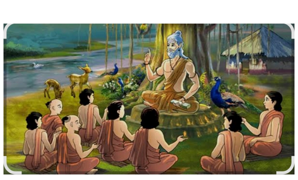

26-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

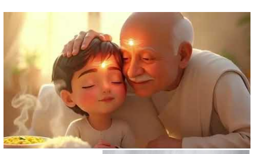

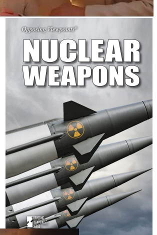

एडाप्शन कितनी फर्स्टक्लास है। यह फिर है ईश्वर की एडाप्शन, आत्माओं को अपना बनाने की। अभी तुम बच्चों ने सबकी एडाप्शन को देख लिया है। संन्यासियों के होते हुए फिर भी गाते रहते हैं - हे पतित-पावन आओ, आकर हमको एडाप्ट कर पावन बनाओ। सब ब्रदर्स हैं। परन्तु जबकि आकर अपना बनाये ना। कहते हैं बाबा हम दु:खी हो पड़े हैं। रावण राज्य का भी अर्थ नहीं समझते हैं। एफ़ीजी बनाकर जलाते रहते हैं। जैसे कोई दु:ख देते हैं तो समझते हैं इन पर केस चलाना चाहिए। परन्तु यह कब से दुश्मन बना है? आखरीन यह दुश्मन मरेगा या नहीं? इस दुश्मन का तुमको ही मालूम है, उन पर जीत पाने के लिए तुमको एडाप्ट किया जाता है। यह भी तुम बच्चे जानते हो, विनाश होना है, एटामिक बॉम्बस भी बने हुए हैं। इस ज्ञान यज्ञ से ही विनाश ज्वाला निकली है। अभी तुम जानते हो रावण पर विजय पाकर फिर नई सृष्टि पर राज्य करेंगे। बाकी तो सब गुड़ियों का खेल है। रावण की गुड्डी तो बहुत खर्चा कराती है। मनुष्य बहुत पैसे फालतू गँवाते हैं। कितना रात-दिन का फ़र्क है। वह भटकते दु:खी होते, धक्के खाते रहते हैं। और हम अभी श्रीमत पर

26-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

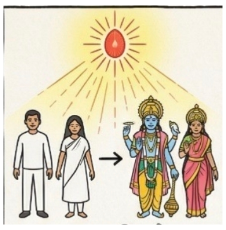

श्रेष्ठाचारी, सतयुगी स्वराज्य पा रहे हैं। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ सतयुग स्थापन करने वाला शिवबाबा हमको श्रेष्ठ देवता विश्व का मालिक बनाते हैं। श्री श्री शिवबाबा हमको श्री बनाते हैं। ये तो पक्का कर लो.. श्री श्री सिर्फ एक को ही कहा जाता है। देवताओं को श्री कहा जाता है क्योंकि वह पुनर्जन्म में आते हैं ना। वास्तव में श्री विकारी राजाओं को भी नहीं कह सकते हैं।

विशाल बुद्धि

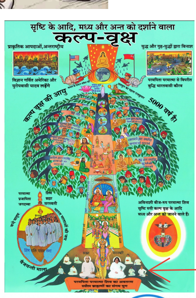

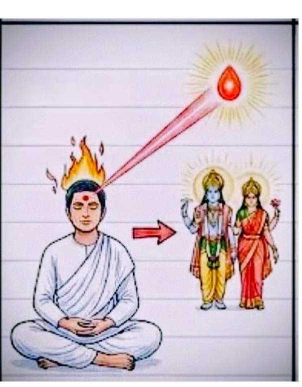

अभी तुम्हारी कितनी विशालबुद्धि होनी चाहिए। तुम जानते हो कि हम इस पढ़ाई से डबल सिरताज बनते हैं। हम ही डबल सिरताज थे, अभी तो सिंगल ताज भी नहीं है। पतित हैं ना। यहाँ लाइट का ताज किसको लगा नहीं सकते। इन चित्रों में जहाँ तुम तपस्या में बैठे हो वहाँ लाइट का ताज नहीं देना चाहिए। तुमको डबल सिरताज भविष्य में बनना है। तुम बच्चे जानते हो हम बाबा से डबल सिरताज महाराजा-महारानी बनने के लिए आये हैं। यह खुशी होनी चाहिए। शिवबाबा को याद करना चाहिए तो पतित से पावन बन स्वर्ग के मालिक बन जायेंगे,

26-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

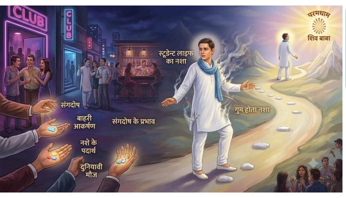

इसमें कोई तकलीफ की बात नहीं है। यहाँ तुम स्टूडेन्ट बैठे हो। वहाँ बाहर मित्र-सम्बन्धियों आदि के पास जाने से स्टूडेन्ट लाइफ भूल जाती है। फिर मित्र सम्बन्धी याद आ जाते हैं। Never forget this (It is invisible force) माया का फोर्स है ना। हॉस्टल में रहने से पढ़ते अच्छा है। बाहर आने-जाने से संगदोष में खराब होते हैं। यहाँ से बाहर जाते हैं तो फिर स्टूडेन्ट लाइफ का नशा गुम हो जाता है।

समझा?
The power of माया।

पढ़ाने वाली ब्राह्मणियों को भी वहाँ बाहर में इतना नशा नहीं रहेगा, जितना यहाँ रहेगा। यह हेड ऑफिस मधुबन है। स्टूडेन्ट टीचर के सामने रहते हैं।

उल्टे धन्धे कोई नहीं है। रात-दिन का फ़र्क है। कोई तो सारे दिन में शिवबाबा को याद भी नहीं करते हैं। शिवबाबा के मददगार नहीं बनते हैं। शिवबाबा के बच्चे बने हो तो सर्विस करो। अगर सर्विस नहीं करते

समझा?

तो गोया वह Definition of कपूत बच्चे हैं। बाबा तो समझते हैं ना।

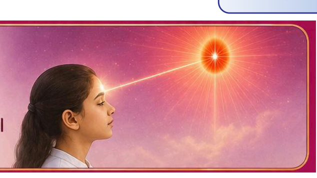

इनका फ़र्ज है कहना - मुझे याद करो। फॉलो करो तो बहुत-बहुत कल्याण है। विकारी सम्बन्ध तो

भ्रष्टाचारी हैं। उनको छोड़ते जाओ, उनसे संग नहीं रखो। बाप तो समझाते हैं परन्तु किसकी तकदीर में भी हो ना। बाबा कहे - चार्ट रखना है, इनसे भी बहुत

कल्याण होगा। कोई घण्टा भी मुश्किल याद में रहता

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

होगा। 8 घण्टा तो अन्त में पहुँचना है। कर्म-योगी तो हो ना। कोई-कोई को उमंग कभी-कभी आता है तो चार्ट रखते हैं। यह अच्छा है। जितना बाप को याद करेंगे फायदा ही है। गाया हुआ है - अन्तकाल जो हरि को सुमिरे... वल-वल का अर्थ क्या है? जो अच्छी रीति याद नहीं करते हैं, तो जन्म-जन्मान्तर का बोझा जो है, वह वल-वल (बार-बार) जन्म देकर साक्षात्कार कराए फिर सजा देते हैं। जैसे काशी कलवट खाते हैं तो झट पापों का साक्षात्कार होता है। महसूस करते हैं हम पापों की सजा खाते हैं। बहुत मोचरा खाने वाले हैं। बाबा की सर्विस में जो विघ्न डालते हैं, वह सजाओं के लायक हैं। बाप की सर्विस में बाधा डालते हैं, जिसका राइट हैण्ड धर्मराज है। बाप कहते हैं - अपने साथ प्रतिज्ञा करो क्योंकि बाप की याद से ही तुम पावन बनेंगे। नहीं तो नहीं। बाप प्रतिज्ञा कराते हैं, करो न करो, तुम्हारी मर्जी। जो करेगा सो पायेगा। बहुत हैं जो प्रतिज्ञा करते हैं, फिर भी बुरे काम करते रहते हैं। भक्ति मार्ग में गाते रहते हैं - मेरा तो एक दूसरा न कोई। परन्तु वह बात अभी बुद्धि में आती है कि आत्मा क्यों ऐसे गाती आई है। सारा दिन गाते रहते हैं मेरा तो एक

Note it down

Choice is All yours...

Simple Math..

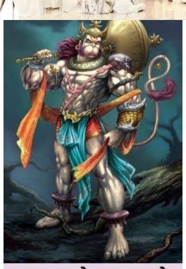
राम दुआरे तुम रखवारे
होत न आज्ञा बिनु पैसारे |

Refer last pages for more details

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

26-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

The Rajkumar College
Rajkot - ESTD. 1870

गिरधर गोपाल... यह तो संगम पर बाप आये तब अपने घर ले जाए, कृष्णपुरी में जाने के लिए तुम पढ़ते हो ना। प्रिन्सेज़ कॉलेज होते हैं, जहाँ प्रिन्स-प्रिन्सेज पढ़ते हैं। वह तो है हद की बात। कभी बीमार पड़ते, कभी मर भी जाते। यह तो है प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने की गॉड फादरली युनिवर्सिटी। राजयोग है ना। तुम नर से नारायण बनते हो। तुम बाप से वर्सा ले सतयुग का प्रिन्स-प्रिन्सेज बनते हो।

बाप तुम बच्चों को कितनी मज़े की बातें बैठ सुनाते हैं। याद रहना चाहिए ना। कोई तो यहाँ से बाहर निकले तो फँस जाते हैं। बाप को याद भी नम्बरवार करते हैं। जो जास्ती याद करते होंगे वह औरों को भी याद कराते होंगे। बुद्धि में यही रहना चाहिए कि कैसे बहुतों का कल्याण करें। बाहर वाले प्रजा में दास-दासी, यहाँ वाले फिर राजाओं में दास-दासी बनेंगे। आगे चल सब साक्षात्कार होता जायेगा। तुम भी फील करेंगे बरोबर हमने पूरा पुरुषार्थ नहीं किया है, बहुत चमत्कार देखेंगे। जो अच्छी रीति पढ़ेंगे वही

Coming soon...

Are you ready?

Points: ज्ञान योग धारणा

Simple Math..

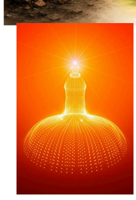

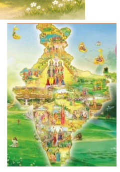

नवाब बनेंगे। बाप कितना कहते रहते हैं - सेन्टर्स को प्रदर्शनी देता हूँ तो बच्चों को सिखाकर होशियार बनायें। तब बाबा समझेंगे बी.के. सर्विस करना जानती हैं। सर्विस करेंगे तो ऊंच पद पायेंगे, इसलिए बाबा प्रदर्शनी बनाने पर जोर दे रहे हैं। यह चित्र बनाना तो बहुत कॉमन चीज़ है। हिम्मत कर प्रदर्शनी के चित्र बनाने में मदद करनी चाहिए तो समझाने में बच्चों को सहज होगा। बाबा समझते हैं - टीचर्स, मैनेजर्स ठण्डे हैं। कोई-कोई ब्राह्मणियां मैनेजर बनती हैं तो देह-अभिमान आ जाता है। अपने को मिया मिट्ठू समझती हैं। हम बहुत अच्छी चलती हैं। दूसरों से पूछो तो 10 बातें सुनायेंगे। Attention..! माया बड़ा चक्कर में डालती है। बच्चों को तो सर्विस और सर्विस में रहना चाहिए। बाप रहमदिल, दु:ख हर्ता सुख कर्ता है तो बच्चों को भी बनना है, सिर्फ बाप का परिचय देना है। बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो तो नर्कवासी से स्वर्गवासी बन जायेंगे। कितना सहज है। बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो पतित से पावन बन तुम शान्तिधाम, सुखधाम में आ जायेंगे। निश्चय हो तो फिर एकदम लिखवा लेना चाहिए। लिखते भी हैं बरोबर ब्रह्माकुमार कुमारियां शिवबाबा से वर्सा लेते

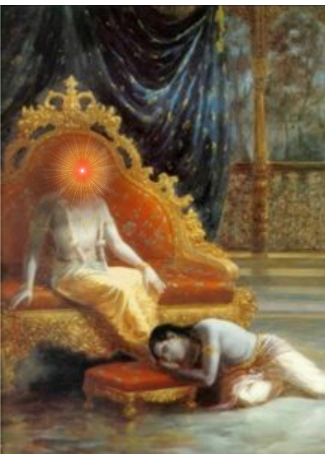

हैं, तो समझेंगे ऐसे बाप का तो जरूर बनना चाहिए। शरण पड़ना चाहिए। तुम बाप की शरण पड़े हो ना अर्थात् गोद में आये हो। अच्छा!

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

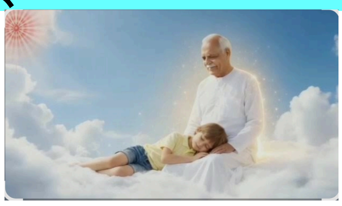

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

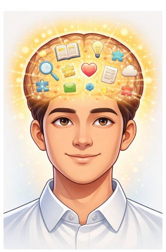

धारणा के लिए मुख्य सार:-

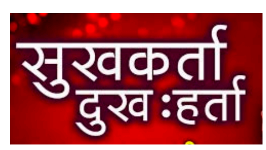

1) बाप समान रहमदिल, दु:ख हर्ता सुख कर्ता बनना है।

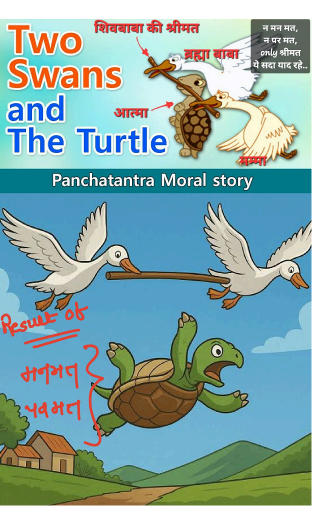

2) संगदोष से अपनी बहुत-बहुत सम्भाल करनी है।

None but Only One

एक बाप को ही फॉलो करना है। बहुतों के कल्याण की सर्विस करनी है। कभी अहंकार में आकर मिया मिट्ठू नहीं बनना है

Points: ज्ञान य... से... ...mp.

Method/Process/Instrument   Outcome/Output/Result

26-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान: अन्तर्मुखी बन अपने समय और संकल्पों की बचत करने वाले विघ्न जीत भव

Finale Achievement

कोई भी नई पावरफुल इन्वेन्शन करते हैं तो अन्डरग्राउण्ड करते हैं।

Advantages

आप भी जितना अन्तर्मुखी अर्थात् अन्डरग्राउण्ड रहेंगे उतना वायुमण्डल से बचाव हो जायेगा, मनन शक्ति बढ़ेगी और माया के विघ्नों से भी सेफ हो जायेंगे।

Homework

Advantages

बाहरमुखता में आते भी अन्तर्मुख, हर्षितमुख, आकर्षणमूर्त रहो, कर्म करते भी यह प्रैक्टिस करो तो समय की बचत होगी और सफलता भी अधिक अनुभव करेंगे।

स्लोगन:- बीमारी से घबराओ नहीं, उसे दवाई रूपी फ्रूट खिलाकर विदाई दे दो।

Points: ज्ञान योग धारण

26-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

ये अव्यक्त इशारे

Call of time/समय की पुकार

अब अपने दाता स्वरूप को प्रत्यक्ष करो

तुम बच्चों को किसी भी आत्मा से कुछ लेना नहीं है।

सिर्फ एक बाप से ही लेना है और जो लिया है वह सबको देना है।

जहाँ देना है, वहाँ लेने की इच्छा नहीं रखना।

अगर आत्मा, आत्मा द्वारा कुछ-भी लेने की इच्छा रखती है तो उन्हें अल्पज्ञ आत्माओं से अल्पकाल की ही प्राप्ति होगी।

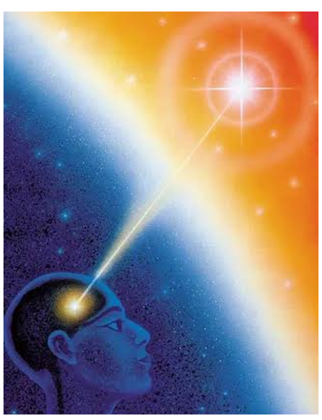

ये पक्का समझ लो..

एक सर्वज्ञ बाप से ही सदाकाल की प्राप्ति होगी।

No matter How Subtle it is....

किसी भी प्रकार की लेने की इच्छा अपने स्वमान से गिरा देती है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Aug 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Aug 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.1 अमृतवेले का समय कब है?

Mind very well...

(इ) **2-3 बजे को अमृतवेला कहा जाता है।** बाप का फ़रमान है सवेरे उठने का प्रयत्न करो। दिन में तो याद न भी ठहरे, रात को पुरुषार्थ करना सहज है और मदद भी बहुत मिलेगी। बेहद की राजाई लेनी है तो रात को जाग कर भी याद की यात्रा करो। मैं आता ही हूँ घोर अन्धियारी रात में। ब्रह्मा की रात पूरी हो दिन होता है। मैं आता हूँ बेहद की रात और बेहद के दिन में संगम पर। तो तुम भी रात में नींद को जीत, याद करने का अभ्यास करो। **2-3 बजे के समय को ब्रह्म-मुहूर्त**

96

2/18/2010, 11:58 AM

कहा जाता है। बाप शिक्षा देते हैं ब्रह्मा द्वारा — रात को जाग मुझे याद करो तो पक्के हो जायेंगे।

(ई) तो बाप बच्चों को कहते हैं — सवेरे का टाइम बहुत अच्छा है। बड़ा मजा आता है। वायुमण्डल अच्छा रहता है। तो रात को जल्दी सो जाओ फिर 2-3 बजे उठो। आराम से बैठो और बाबा से बातें करो।

This is Just churning (વિચાર સાગર મંથન)......
Kindly grab it as per your divine Intellect

मीठे बाबा की श्रीमत है की "बच्चे विचार सागर मंथन करो"

Click

प्रश्नः- ज्ञान सुनते हुए भी बच्चों में उसकी धारणा क्यों नहीं होती है?

उत्तर:- क्योंकि विचार सागर मंथन करना नहीं आता है। बुद्धियोग देह और देह के सम्बंधों में लटका हुआ है। पहले जब बुद्धि से मोह निकले, तब कुछ धारणा भी हो। मोह ऐसी चीज़ है, जो एकदम बन्दर बना देता है इसलिए बाप बच्चों को पहला-पहला वायदा याद दिलाते हैं - देह सहित, देह के सब सम्बन्धों को भूलो और मुझे याद करो।

कालों का काल है बाप। उनकी आज्ञा नहीं मानेंगे तो धर्मराज से डन्डा खायेंगे।
---- साकार मुरली:- 30/1/25

हनुमान का छोटा सा भी मंदिर होगा तो उनके पास लाल डंडा या गदा *जरूर होगी।*
यह यादगार है बापदादा के right hand *धर्मराज* का..

इसीलिए हनुमान चालीसा में कहा है कि
राम दुआरे तुम रखवारे(राम द्वार = सूक्ष्म वतन धर्मराजपुरी बन जाएगी)
होत न आज्ञा बिनु पैसारे... (हनुमान/ धर्मराज के द्वारा सजाओ के बल से जब तक आत्मा पावन नही बनती तब तक उनको परमधाम में प्रवेश होने की permission नहीं है except अष्ट रत्न)

(उसका यादगार: majority गांव में आज भी हनुमान मंदिर देखेंगे तो वो गांव के बाहर/गांव के दरवाजे पर/entrance के आसपास होगा... इसका मतलब है कि हनुमान/धर्मराज परमधाम के बाहर यानी सूक्ष्मवतन पे खड़ा है।)

"बाप को धर्मराज का साथ लेना पसन्द नहीं है। कर क्या नहीं सकता है! एक सेकेण्ड में किसी को भी अन्दर ही अन्दर सज़ा दे सकते हैं और वो सेकेण्ड की सज़ा बहुत-बहुत तेज़ होती है। लेकिन बापदादा नहीं चाहते।

बाप का रूप प्यारा है, धर्मराज साथी बना तो कुछ नहीं सुनेगा।"

AV: 25/11/95

Attention Please...!

जो बाबा, साकार मुरली में कहते है की पिछाड़ी में कायदे बहुत कड़े हो जाएंगे। वो इसी संदर्भ में बाबा कहते होंगे।

Example :→ दिन-प्रतिदिन बहुत कड़े कायदे होते जायेंगे।
SM: 31/12/2025

Sakar Murli date :- 8/6/2023

से पूछो कि क्राइस्ट याद आता है या गॉड फादर? जानते हो कि पाप करेंगे तो दण्ड भोगना पड़ेगा। परन्तु बाप दण्ड कभी नहीं देता। (Note down!) वह करनकरावनहार है। धर्मराज द्वारा सजा दिलाते हैं। गॉड तो मोस्ट बील्वेड बाप है। वह झूठे कलंक लगाते हैं कि बाप ही सुख-दु:ख देते हैं। तो क्या बेरहम हैं? गाते भी हैं मर्सीफुल। बाप कहते हैं मैं कैसे बेरहमी करूँगा। माया ने तुम्हारे पर बेरहमी की है। मैं तो उनसे छुड़ाता हूँ। माया

Avyakt Murli : 15/11/2003

ब्रह्मा बाप को फॉलो करो। अपवित्रता का नाम निशान नहीं, ब्राह्मण जीवन माना यह है। माताओं में भी मोह है तो अपवित्रता है। मातायें भी ब्राह्मण हैं ना। तो ना माताओं में, ना कुमारियों में, ना कुमारों में, न अधर कुमार कुमारियों में। ब्राह्मण माना ही है पवित्र आत्मा। अपवित्रता का अगर कोई कार्य होता भी है तो यह बड़ा पाप है। इस पाप की सजा बहुत कड़ी है। ऐसे नहीं समझना यह तो चलता ही है। थोड़ा बहुत तो चलेगा ही, नहीं। यह फर्स्ट सबजेक्ट है। नवीनता ही पवित्रता की है। ब्रह्मा बाप ने अगर गालियां खाई तो पवित्रता के कारण। हो गया, ऐसे छूटेंगे नहीं। अलबेले नहीं बनो इसमें। कोई भी ब्राह्मण चाहे सरेण्डर है, चाहे सेवाधारी है, चाहे प्रवृत्ति वाला है, इस बात में धर्मराज भी नहीं छोड़ेगा, ब्रह्मा बाप भी धर्मराज को साथ देगा। इसलिए कुमार कुमारियां कहाँ भी हो, मधुबन में हो, सेन्टर पर हो लेकिन इसकी चोट, संकल्प मात्र की चोट बहुत बड़ी चोट है। गीत गाते हो ना - पवित्र मन रखो, पवित्र तन रखो.. गीत है ना आपका। तो मन पवित्र है तो जीवन पवित्र है इसमें हल्के नहीं होना, थोड़ा कर लिया क्या है! थोड़ा नहीं है, बहुत है। बापदादा आफीशियल इशारा दे रहा है, इसमें नहीं बच सकेंगे। इसका हिसाब-किताब अच्छी तरह से लेंगे, कोई भी हो। इसलिए सावधान, अटेन्शन। सुना - सभी ने ध्यान से। दोनों कान खोल के सुनना। वृत्ति में भी टचिंग नहीं हो। दृष्टि में भी टचिंग नहीं। संकल्प में नहीं तो वृत्ति दृष्टि क्या है! क्योंकि समय सम्पन्नता का समीप आ रहा है, बिल्कुल प्युअर बनने का। उसमें यह चीज़ तो पूरा ही सफेद कागज पर काला दाग है।

Dadi Jankiji says : → **Click**

शिवबाबा | हनुमान = **धर्मराज** = शंकर | **ब्रह्माबाबा**

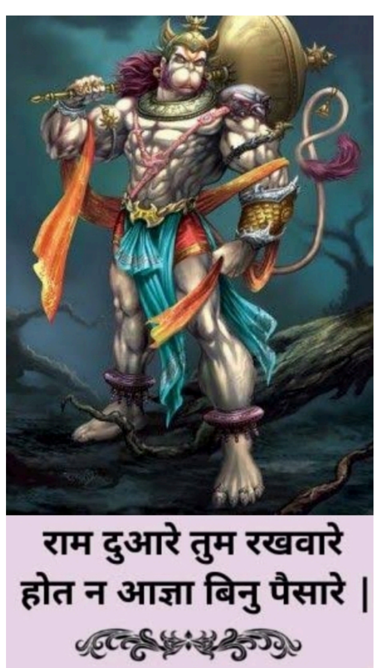

It is not from Authentic source But Placed here for Building connection.

- शंकर क्या करते हैं? उनका (विषपायी) पार्ट ऐसा वण्डरफुल है जो तुम विश्वास कर न सको। ***

(मु.14.5.70 पृ.2 आदि)

बाप का रूप प्यारा है,
धर्मराज साथी बना तो कुछ नहीं सुनेगा।
AV: 25/11/95

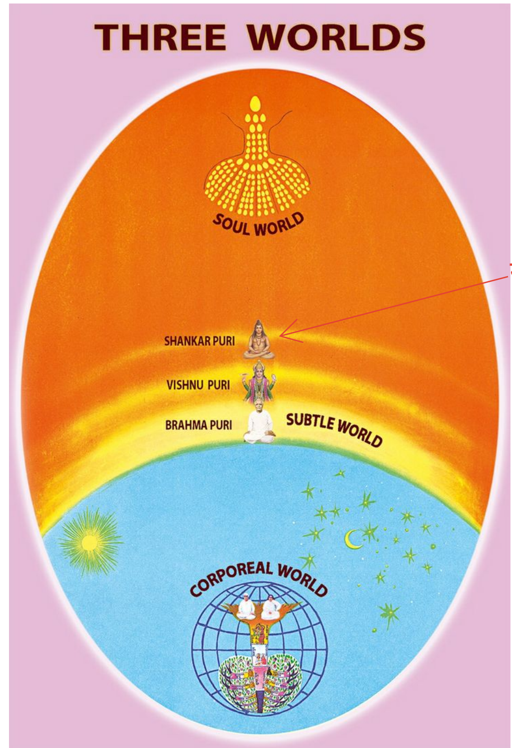

राम दुआरे तुम रखवारे

बाप का जो गायन है कि वह सर्जन भी है, इंजीनियर भी है, वकील भी है, जज भी है - इसका प्रैक्टिकल सब अनुभव करेंगे, तब सब तरफ से बुद्धि हटकर एक तरफ जायेगी।
AV: 2/11/87

महावीर का दिखाते हैं न कि वह सारी पहाड़ी की पहाड़ी को ले आया।
AV: 28/12/79

Mind very well... *** शंकर का पार्ट प्रैक्टिकल तो बजना है लेकिन शक्तियाँ ही संहार का पार्ट बजाती हैं, शंकर को नहीं बजाना है। शक्तियों को संहारी रूप धारण करना है, जिससे संहार करना है। AV: 9/10/71

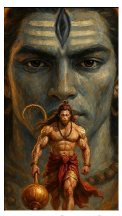

शंकर स्वयं केसरी नंदन

Reference → **Click**

Secret Revealed

(26) बच्चों ने पूछा कि एक ही समय इकट्ठा मृत्यु कैसे और क्यों होता? इसका कारण है। यह तो जानते हो और अनुभव करते हो कि अब सम्पन्न होने का समय समीप आ रहा है। सभी आत्माओं का, द्वापरयुग वा कलियुग से किए हुए विकर्मों वा पापों का खाता जो भी रहा हुआ है वह अभी पूरा ही समाप्त होना है। क्योंकि सभी को अब वापस घर जाना है। द्वापर से किये हुए कर्म वा विकर्म दोनों का फल अगर एक जन्म में समाप्त नहीं होता तो दूसरे जन्मों में भी चूक्तू का वा प्राप्ति का हिसाब चलता आता है। लेकिन अभी लास्ट समय है और पापों का हिसाब ज्यादा है। इसलिए अब जल्दी-जल्दी जन्म और मृत्यु - इस सजा द्वारा अनेक आत्माओं का पुराना खाता खत्म हो रहा है। तो वर्तमान समय मृत्यु भी दर्दनाक और जन्म भी मैजारिटी का बहुत दुःख से हो रहा है। न सहज मृत्यु, न सहज जन्म है। तो दर्दनाक मृत्यु और दुःखमय जन्म यह जल्दी हिसाब किताब चूक्तू करने का साधन है। जैसे इस पुरानी दुनिया में चीटियाँ, चीटें, मच्छर आदि को मारने के लिए साधन अपनाये हुए हैं। उन साधनों द्वारा एक ही साथ चीटियाँ वा मच्छर वा अनेक प्रकार के कीटाणु इकटठे ही विनाश हो जाते हैं ना। ऐसे आज के समय मानव भी मच्छरों, चीटियों सदृश्य अकाले मृत्यु के वश हो रहे हैं। मानव और चीटियों में अंतर ही नहीं रहा है। यह सब हिसाब-किताब और सदा के लिए समाप्त होने के कारण इकट्ठा अकाले मृत्यु का तूफान समय प्रति समय आ रहा है।

m.Imp. *****

Example

वैसे धर्मराज पुरी में भी सजाओं का पार्ट अंत में नूँधा हुआ है। लेकिन वह सजायें सिर्फ आत्मा अपने आप भोगती और हिसाब-किताब चूक्तू करती है। लेकिन कर्मों के हिसाब अनेक प्रकार में भी विशेष तीन प्रकार के हैं। एक हैं आत्मा को अपने आप भोगने वाले हिसाब। जैसे - बिमारियाँ। अपने आप ही आत्मा तन

Point to be Noted

(1)

(3)

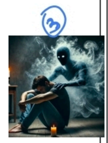

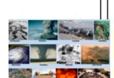

Point to be Noted

By hook or by crook
चाहे प्यार से..
चाहे मार से..

imp to understand

Most

(2)

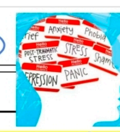

के रोग द्वारा हिसाब चूक्तू करती है। ऐसे और भी दिमाग कमजोर होना वा किसी भी प्रकार की भूत प्रवेशता। ऐसे-ऐसे प्रकार की सजाओं द्वारा आत्मा स्वयं हिसाब-किताब भोगती है। दूसरा हिसाब है - सम्बन्ध सम्पर्क द्वारा दुःख की प्राप्ति। यह तो समझ सकते हो ना, कि कैसे है। और तीसरा है - प्राकृतिक आपदाओं द्वारा हिसाब-किताब चूक्तू होना। तीनों प्रकार के आधार से हिसाब-किताब चूक्तू हो रहे हैं। तो धर्मराजपुरी में सम्बन्ध (Type-2) और सम्पर्क द्वारा हिसाब वा प्राकृतिक (Type-3) आपदाओं द्वारा हिसाब-किताब चूक्तू नहीं होगा। वह यहाँ साकार सृष्टि में होगा। सारे पुराने खाते सभी के खत्म होने ही है। इसलिए यह हिसाब-किताब चूक्तू की मशीनरी अब तीव्रगति से चलनी ही है। विश्व में यह सब होना ही है। समझा। यह है कर्मों की गति का हिसाब-किताब। अब अपने आप को चेक करो - कि मुझ ब्राह्मण आत्मा का तीव्रगति के तीव्र पुरुषार्थ द्वारा सब पुराने हिसाब-किताब चूक्तू हुए है वा अभी भी कुछ बोझ रहा हुआ है? पुराना खाता भी कुछ रहा हुआ है वा समाप्त हो गया है? इसकी विशेष निशानी जानते हो? श्रेष्ठ परिवर्तन में वा श्रेष्ठ कर्म करने में कोई भी अपना स्वभाव-संस्कार विघ्न डालता है वा जितना चाहते है, जितना सोचते है उतना नहीं कर पाते है और यही बोल निकलते वा संकल्प मन में चलते कि न चाहते भी पता नहीं क्यों हो जाता है। पता नहीं क्यों हो जाता है? वा स्वयं की चाहना श्रेष्ठ होते, हिम्मत उल्लास होते भी परवश अनुभव करते है, कहते है ऐसा करना तो नहीं था, सोचा नहीं था लेकिन हो गया। इसको कहा जाता है स्वयं के पुराने स्वभाव संस्कार के परवश। यह तीनों प्रकार के परवश स्थितियाँ होती है तो न चाहते हुए होना, सोचते हुए न होना वा परवश बन सफलता को प्राप्त न करना - यह निशानी पिछले पुराने खाते के बोझ की। इन निशानियों द्वारा अपने आपको चेक करो - किसी भी प्रकार का बोझ उड़ती कला के अनुभव से नीचे तो नहीं ले आता। हिसाब चूक्तू अर्थात् हर प्राप्ति के अनुभवों में उड़ती कला। कब-कब प्राप्ति है। कब है तो अब रहा हुआ है। तो इसी विधि से अपने आपको चेक करो। दुःखमय दुनिया में तो दुःख की घटनाओं के पहाड़ फटने ही हैं। ऐसे समय पर

Attention..!

सेफ्टी का साधन है ही 'एक बाप की छत्रछाया'। छत्रछाया तो है ही ना!

(10.12.1984)

राम दुआरे तुम रखवारे
होत न आज्ञा बिनु पैसारे |

10|3|26

है। वह खुशी व नशा नहीं रहता है। फिर बड़े विकर्म भी उनसे होते हैं, जिस कारण बड़े दण्ड के भागी बन पड़ते हैं। देह-अभिमानी बनने से बहुत नुकसान पाते हैं। बहुत सजा खानी पड़ती है। बाप कहते हैं यह गॉडली वर्ल्ड गवर्मेन्ट है ना। मुझ गॉड की गवर्मेन्ट का राइट हैण्ड है धर्मराज। तुम अच्छे कर्म करते हो तो उनका फल अच्छा मिलता है। बुरे कर्म करते हो तो उनकी सजा खाते हो। सब गर्भ जेल में भी सजायें खाते हैं। उस पर भी एक

23/4/2026

Coming very soon...

For more.. Refer last pages

राम दुआरे तुम रखवारे
होत न आज्ञा बिनु पैसारे |

हैं। ऐसे कर्म करने वाले बहुत नाज़ुक होते जायेंगे। आगे चल नहीं सकेंगे। पिछाड़ी के नाज़ुक समय कोई कुछ करता है तो एकदम मार्शल लॉ चलाते हैं। आगे चल तुम बहुत देखेंगे। बाबा क्या-क्या करते हैं। बाबा थोड़ेही सज़ा देंगे, धर्मराज द्वारा दिलवाते हैं। ज्ञान में प्रेरणा की बात नहीं है। भगवान को तो सब मनुष्य कहते हैं हे पतित-पावन आओ हमको आकर पावन बनाओ। सभी

गुह्य बात सुनाता हूं।

Secret

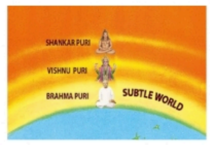

Sakar vani

14/10/25

जैसे बाबा ने समझाया है शिव और शंकर को मिलाया क्यों है? शंकर का तो इस सृष्टि में पार्ट ही नहीं है। शिव का, ब्रह्मा का, विष्णु का पार्ट है। ब्रह्मा और विष्णु का आलराउन्ड पार्ट है। शिवबाबा का भी इस समय पार्ट है, जो आकर ज्ञान देते हैं। फिर निर्वाणधाम में चले जाते हैं। बच्चों को जायदाद देकर खुद वानप्रस्थ में चले जाते हैं।

जैसे आप लोगों ने देखा होगा कि कभी-कभी छोटे बच्चे जब कोई चीज के पीछे लग जाते हैं तो वह चीज भल अच्छी भी होती है लेकिन हद से ज्यादा उस अच्छी चीज के पीछे पड़ जाते हैं तो बच्चों से क्या किया जाता है? वह चीज उनकी आँखों से छिपाकर यह कहा जाता है कि है ही नहीं। इसलिए ही कहा जाता है कि इसकी जो एकस्ट्रा लगन लग गई है, वह कुछ ठीक हो जाए। AV 2/2/69

शंकर का पार्ट प्रैक्टिकल तो बजना है लेकिन शक्तियाँ ही संहार का पार्ट बजाती हैं, शंकर को नहीं बजाना है। शक्तियों को संहारी रूप धारण करना है, जिससे संहार करना है। AV: 9/10/71

बाप का जो गायन है कि वह सर्जन भी है, इंजीनियर भी है, वकील भी है, जज भी है - इसका प्रैक्टिकल सब अनुभव करेंगे, तब सब तरफ से बुद्धि हटकर एक तरफ जायेगी। अभी तो आपके पीछे भीड़ लगने वाली है। बापदादा तो यह दृश्य देखते हैं और कभी-कभी अब के दृश्य देखते हैं - बहुत फर्क लगता है। आप हो कौन, वह बाप जानता है! बहुत-बहुत वण्डरफुल पार्ट होने हैं, जो ख्याल- ख्वाब में भी नहीं हैं। सिर्फ थोड़ा रूका हुआ है, बस। जैसे पर्दा कभी-कभी थोड़ा अटक जाता है ना। झण्डा भी लहराते हो तो कभी अटक जाता है। ऐसे अभी थोड़ा-थोड़ा अटक रहा है। आप जो है, जैसे हो - बहुत महान हो। जब आपकी विशेषता प्रत्यक्ष होगी तब तो इष्ट बनेंगे। आखिर तो भक्त माला भी प्रत्यक्ष होगी ना। लेकिन पहले ठाकुर सजकर तैयार हों तब तो भक्त आयें ना। अच्छा।

AV: 2/11/87

"बाप को धर्मराज का साथ लेना पसन्द नहीं है। कर क्या नहीं सकता है! एक सेकेण्ड में किसी को भी अन्दर ही अन्दर सज़ा दे सकते हैं और वो सेकेण्ड की सज़ा बहुत-बहुत तेज़ होती है। लेकिन बापदादा नहीं चाहते।

बाप का रूप प्यारा है, धर्मराज साथी बना तो कुछ नहीं सुनेगा।"
AV: 25/11/95

जायेगा। न बताने से वह वृद्धि होती जायेगी। जास्ती फँसते जायेंगे। फिर तकदीर खत्म हो, बदकिस्मती आ जायेगी। बाप कहते हैं - देह से भी सम्बन्ध न रखो, हमेशा मामेकम् याद करते रहो फिर कोई गंदा काम नहीं होगा। यह धर्मराज भी है, उनसे भी छिपाते रहेंगे तो फिर तुम्हारे जैसी सजा कोई को नहीं मिलेगी। जितना समय नजदीक होगा सबको साक्षात्कार होता जायेगा। अभी सबकी कयामत का समय है, सब पतित हैं। पापों

Attention..!

समझा?

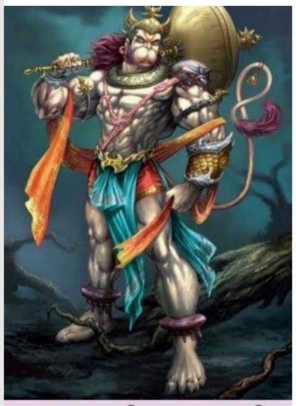

राम दुआरे तुम रखवारे होत न आज्ञा बिनु पैसारे |

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Coming soon... Are you ready?

का दण्ड जरूर मिलता है। जैसे एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिलती है वैसे एक सेकेण्ड में सजाओं की भासना ऐसे आती है जैसे बहुत समय से सजायें खाता ही रहता हूँ। यह बड़ी सूक्ष्म मशीनरी है। सबके कयामत का समय है। सज़ा भोगनी तो है जरूर। फिर सब आत्मायें पवित्र होकर जाती हैं। बाप ही आकर पतित आत्माओं को पावन बनाते हैं। बाप के सिवाए और कोई की ताकत नहीं। 63 जन्म पाप करते-करते अभी तुम्हारे पापों का घड़ा आकर भरा है। माया का ग्रहण सबको लगा हुआ है। बड़ा ग्रहण तुम पर लगा है। सर्वगुण सम्पन्न तुम

Point to be Noted

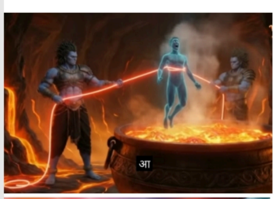

Words of world Almighty Authority